अंक 14 माह: अक्टूबर 2025

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, स्वतंत्र सोच और आत्मसम्मान का पहला दीपक है— और यह दीपक नारी के हाथों में सबसे अधिक उजाला फैलाता है।"

संपादकीय

महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला विशेषांक

प्रिय पाठकों,

इस माह के डिजिटल न्यूज़लेटर में हम प्रस्तुत कर रहे हैं एक विशेषांक, जो समर्पित है— "महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला" को, जो विश्वविद्यालय की 13 अध्ययन शालाओं में से एक प्रमुख एवं अग्रणी शाला के रूप में निरंतर उत्कृष्टता का प्रतिमान स्थापित कर रही है।

मानविकी और भाषाएँ किसी भी समाज की आत्मा होती हैं—विचार, संवाद, संवेदना और सृजनशीलता का आधार। महर्षि कर्वे अध्ययन शाला न केवल इन मूल्यों को संरक्षित करती है, बल्कि आधुनिक शिक्षा के अनुरूप इन्हें नए आयाम भी देती है। यहाँ अध्ययन केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि मानवीय दृष्टि, सांस्कृतिक बोध, समालोचनात्मक चिंतन और रचनात्मक अभिव्यक्ति का संपूर्ण विकास है।

इस माह, हम इस शाला की उपलब्धियों, चल रहे नवाचारों, सक्रिय विभागीय गतिविधियों, विद्यार्थियों की रचनात्मकता, तथा संकाय के शैक्षणिक योगदानों को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। चाहे वह भाषाओं का गहन अध्ययन हो, साहित्यिक विमर्शों का आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का नेतृत्व, शोध कार्यों की व्यापकता या पाठ्येतर गतिविधियों की सजीवता—महर्षि कर्वे अध्ययन शाला सदैव अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखती है।

हम आशा करते हैं कि यह विशेषांक आपको मानविकी, कला और भाषा के उस विस्तृत संसार से परिचित कराएगा, जो मनुष्य को केवल शिक्षित नहीं बल्कि संवेदनशील, रचनात्मक और विचारशील नागरिक बनाता है। आपकी सहभागिता, सुझाव और समर्थन सदैव इस यात्रा को ऊर्जा देते हैं। नए आयामों, नई प्रेरणाओं और नए अवसरों के साथ— हम मिलकर ज्ञान के इस उजले पथ को और भी विस्तृत करेंगे।

— संपादक
डिजिटल न्यूजलेटर टीम
'विश्वत'

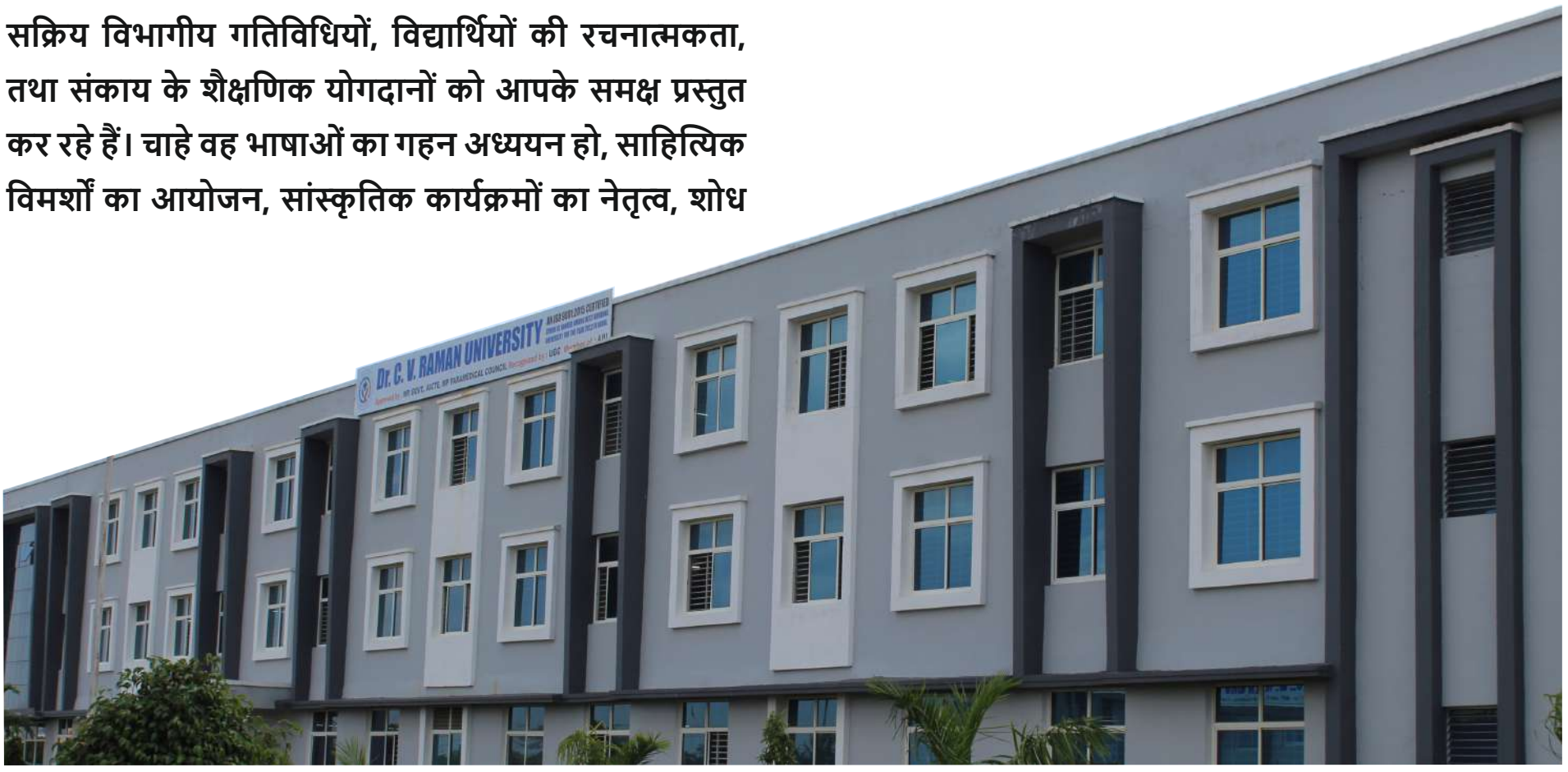

अंक 14, क्रमांक -2,
माहः अक्टूबर 2025

विश्वत

महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला

महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय की उन प्रमुख अध्ययन शालाओं में से एक है, जो विद्यार्थियों को मानवीय मूल्यों, कला, संस्कृति और भाषा के माध्यम से संपूर्ण शिक्षा प्रदान करती है। हमारा उद्देश्य है— ऐसी शिक्षा देना जो ज्ञान के साथ-साथ संवेदनशीलता, रचनात्मकता और सही सोच का विकास करे। मानविकी विषयों का अध्ययन किसी भी समाज के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए हमारी शाला में विद्यार्थियों को न केवल पारंपरिक विषय पढ़ाए जाते हैं, बल्कि उन्हें अच्छा इंसान और जागरूक नागरिक बनाने पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। यहाँ ऐसा शैक्षणिक वातावरण तैयार किया गया है, जहाँ उच्चतम पेशेवर मानकों का पालन हो और विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमता से सीख सकें।

विद्यार्थियों की भाषा क्षमता को बढ़ाने के लिए शाला में अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों की भाषा प्रयोगशालाएँ स्थापित की गई हैं। ये लैब विद्यार्थियों को बोलने, लिखने, समझने और संवाद करने की क्षमता विकसित करने में मदद करती हैं। आने वाले समय में शाला में जर्मन, फ्रेंच और स्पेनिश जैसी विदेशी भाषाओं की पढ़ाई शुरू करने की भी योजना है, ताकि विद्यार्थी वैश्विक स्तर पर और अधिक अवसरों का लाभ उठा सकें। शाला का वातावरण ऐसा बनाया गया है जो अनुसंधान, नवाचार, समूह-अध्ययन, स्वाध्याय और व्यावहारिक अनुभव को बढ़ावा देता है। हमारा प्रयास है कि विद्यार्थी केवल परीक्षा के लिए न पढ़ें, बल्कि जीवन के लिए सीखें। स्थानीय संस्कृति और परंपराओं के अनुरूप शिक्षा को और भी समृद्ध बनाने की दिशा में भी निरंतर कार्य किया जा रहा है।

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. (डॉ.)अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सी. वी. आर. यू. खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी,
कुलसचिव, सी. वी. आर. यू. , खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, अधिष्ठाता अकादमिक
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

हमारी दृष्टि (Our Vision)

निष्ठा, धृति, सत्यम् (समर्पण, स्थिरता और सत्य)

हमारा मिशन (Mission)

- विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्रदान करना।
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को आधुनिक बनाकर अंतःविषयक अध्ययन और नवाचार को बढ़ावा देना।
- विद्यार्थियों और समाज के बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में योगदान देना।
- पारंपरिक शिक्षा के साथ समूह-अध्ययन, स्वाध्याय और कार्य-अनुभव आधारित सीखने के तरीकों को अपनाना।
- स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों के अनुरूप शिक्षा को और सशक्त बनाना।

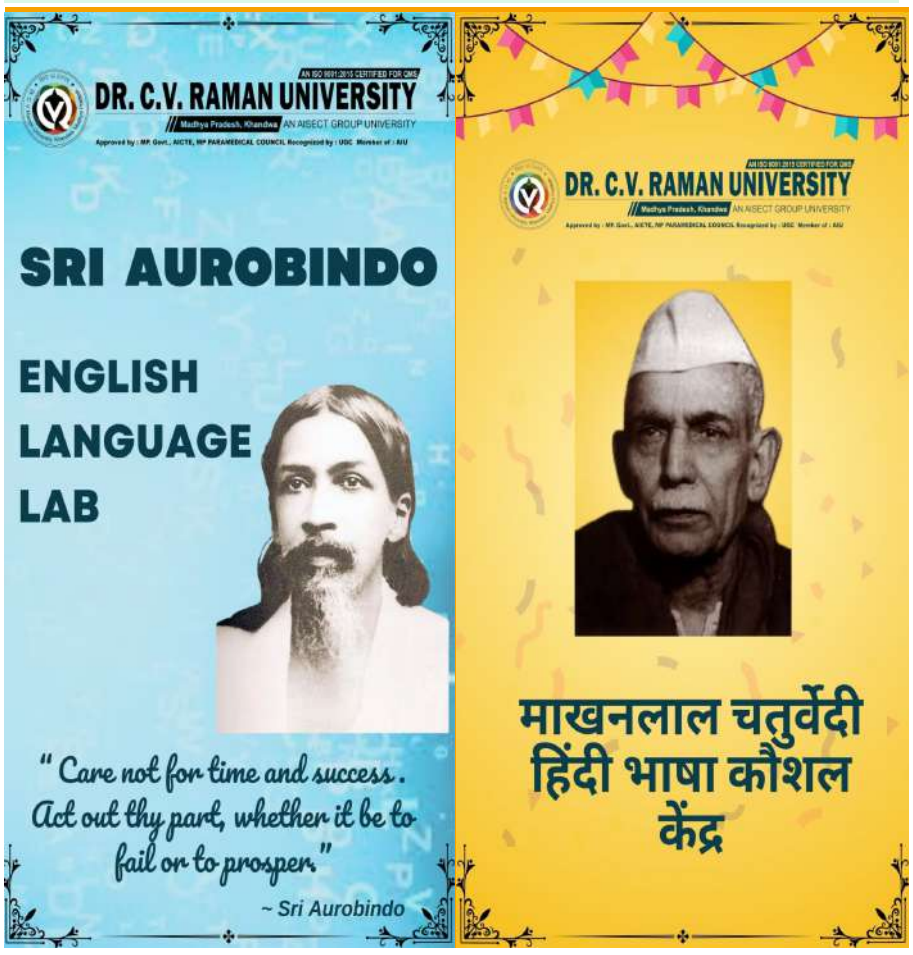

छात्र उपलब्धियाँ – हमारी पहचान, हमारी शक्ति

महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला के विद्यार्थी अपनी प्रतिभा, परिश्रम और अनुशासित कार्यशैली से डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय की पहचान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा रहे हैं। इस माह छात्रों ने भाषा दक्षता, साहित्यिक अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और व्यक्तित्व विकास के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कर अध्ययन शाला का गौरव बढ़ाया है।

भाषा दक्षता – नई दिशा, नया आत्मविश्वास (Hindi & English Language Lab)

हिंदी भाषा प्रयोगशाला और English Language Lab में आयोजित गतिविधियों—

- Spoken English,
- Pronunciation Practice,
- हिंदी अभिव्यक्ति अभ्यास,
- त्वरित संवाद गतिविधियाँ,

ने विद्यार्थियों की भाषा क्षमता को गहराई से निखारा है। उनकी पब्लिक स्पीकिंग, अभिव्यक्ति और संवाद कौशल में आए सुधार ने व्यक्तित्व विकास को नई ऊर्जा दी है।

चरित्र, नेतृत्व और संवेदना—हमारी मूल पहचान

महर्षि कर्वे अध्ययन शाला का उद्देश्य केवल ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि एक ऐसे युवा वर्ग का निर्माण है जो— नेतृत्व, टीमवर्क, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व, और मानवीय संवेदना जैसे मूल्यों को व्यवहार में लाकर समाज के प्रति अपनी भूमिका को सार्थक बनाता है। हमारे विद्यार्थी उत्कृष्टता, संवेदनशीलता और सृजनशीलता का जीवंत उदाहरण हैं — और यही महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला की वास्तविक पहचान और गर्व है।

विविध प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन

अध्ययन शाला के विद्यार्थियों ने विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी अपनी सक्रियता और प्रतिभा का परिचय दिया— पोस्टर प्रेज़ेंटेशन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, समूह चर्चा (Group Discussion), पुस्तक परिचर्चा,नुक्कड़ नाटक, स्थानीय कला एवं संस्कृति आधारित कार्यक्रम, सामुदायिक सहभागिता गतिविधियाँ । इन आयोजनों में छात्रों की तार्किक क्षमता, प्रस्तुति कौशल और विषय-वस्तु की गहरी समझ विशेष रूप से सराही गई।

प्रगति और परंपरा का संगम

संस्कृति, शिक्षा और नवाचार के साथ आगे बढ़ते कदम

महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला अपनी संस्कृति-समृद्ध जड़ों, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों और शोध-आधारित अधिगम के संतुलित समन्वय के लिए जानी जाती है। यहाँ शिक्षा केवल विषय-वस्तु तक सीमित नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और आधुनिक ज्ञान का एक व्यापक एवं समग्र मिश्रण है। इसी दृष्टि के साथ इस माह अध्ययन शाला ने विविध सांस्कृतिक, शैक्षणिक और नवाचार-आधारित गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित किया।

1. स्थानीय संस्कृति और लोक परंपराओं का सृजनात्मक अध्ययन

भारतीय संस्कृति तथा निमाड़ क्षेत्र की समृद्ध लोक परंपराओं को समझाने के लिए विशेष सत्र नियमित रूप से आयोजित किए गए। इन सत्रों में विद्यार्थियों ने—

- लोकगीत व लोकनृत्य,
- त्योहारों की पारंपरिक मान्यताएँ,
- ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक संरचना,
- सामुदायिक जीवन और रीति-रिवाज

जैसे विषयों का गहराई से अध्ययन किया। इन गतिविधियों ने छात्रों को अपनी भूमि, समाज और सांस्कृतिक पहचान से भावनात्मक रूप से जोड़ा, जिससे उनमें सांस्कृतिक चेतना और गौरव की भावना सशक्त हुई।

2. लोक-साहित्य और निमाड़ी संस्कृति पर शोध

अध्ययन शाला द्वारा आयोजित "निमाड़ की लोक-परंपरा" विषयक शोध में विद्यार्थियों ने निमाड़ी संस्कृति के अनेक पहलुओं का विश्लेषण किया—

- लोक-साहित्य
- पारंपरिक आभूषण

- देवस्थान व पूजा-पद्धति
- भोजन संस्कृति
- सामुदायिक त्योहार और लोकरीति

इस शोध कार्य ने विद्यार्थियों के सामने निमाड़ी जीवन की जीवंतता, कलात्मक सौंदर्य और सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट किया। परिणामस्वरूप उनमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गर्व, आत्मीयता और गहरी समझ विकसित हुई।

3. लोक-दर्शन और सांस्कृतिक चेतना पर विशेष व्याख्यान

निमाड़ के महान संत संत सिंगाजी के लोक-दर्शन और उनके नैतिक विचारों पर आधारित व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया गया। व्याख्यानों में यह संदेश प्रमुख रूप से उभरकर आया कि— परंपरा और आधुनिकता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।
संस्कृति-आधारित शिक्षा ही भविष्य का मजबूत आधार बनाती है। इस श्रृंखला ने विद्यार्थियों की सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध किया और उन्हें जीवन तथा समाज को व्यापक दृष्टिकोण से समझने की प्रेरणा दी।

ज्ञान से समाज तक : छात्रों और शिक्षकों की शोध-यात्रा

महर्षि कर्वे मानविकी, कला एवं भाषा अध्ययन शाला ज्ञान को केवल कक्षा की सीमाओं तक नहीं रखती, बल्कि उसे समाज तक पहुँचाने और वास्तविक परिवर्तन का माध्यम बनाने के लिए निरंतर कार्यरत है। इस माह छात्रों और शिक्षकों ने शोध कार्य, सामाजिक गतिविधियों और ज्ञान के व्यवहारिक उपयोग के माध्यम से समाज से अपना संबंध और अधिक मजबूत किया।

1. शोध, फील्ड अध्ययन एवं सामाजिक जुड़ाव

अध्ययन शाला में ज्ञान का विस्तार केवल सिद्धांत तक सीमित नहीं है। यहाँ शिक्षकों और छात्रों ने—

- स्थानीय समुदायों में फील्ड अध्ययन
- सामाजिक मुद्दों पर डेटा-आधारित शोध
- संस्कृति, इतिहास और समकालीन विषयों पर सामुदायिक जुड़ाव
- ग्रामीण क्षेत्रों, मंदिरों, पंचायतों और सांस्कृतिक स्थलों का सर्वेक्षण
- सामाजिक विकास, महिला नेतृत्व और युवाओं की सहभागिता पर अध्ययन के माध्यम से ज्ञान को सीधे समाज से जोड़ा।

इन गतिविधियों ने छात्रों में न केवल शोध-दृष्टि विकसित की, बल्कि समाज की वास्तविक परिस्थितियों को समझने की क्षमता भी बढ़ाई।

2. शोध और प्रकाशन : अकादमिक उपलब्धियों से समाज को दिशा

शाला के शिक्षकों द्वारा मानविकी, समाज विज्ञान, संस्कृति और समकालीन मुद्दों पर आधारित कई महत्वपूर्ण शोध-पत्र प्रकाशित किए गए। इनमें से कई अध्ययन UGC Care सूचीबद्ध जर्नलों में प्रकाशित हुए, जो शैक्षणिक उत्कृष्टता का प्रमाण हैं।
प्रमुख शोध-विषयों में शामिल हैं—

- निमाड़ क्षेत्र के भूले-बिसरे मंदिरों का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक अध्ययन
- पंचायत राज व्यवस्था : अवसर, चुनौतियाँ और महिला सशक्तिकरण
- आपदा प्रबंधन के आधुनिक मॉडल
- आधुनिक राजनीति और नैतिक मूल्यों का विश्लेषण
- लोक-संस्कृति, परंपरा और क्षेत्रीय पहचान पर आधारित अध्ययन

ये शोध न केवल अकादमिक जगत को समृद्ध करते हैं बल्कि समाज व क्षेत्र विशेष की समस्याओं के समाधान में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

3. शिक्षा और समाज के बीच सेतु : शिक्षकों का सक्रिय योगदान

अध्ययन शाला के शिक्षकों ने शिक्षा, संस्कृति, समाज सुधार और ग्रामीण विकास में उल्लेखनीय कार्य किया। उनकी सक्रियता के मुख्य क्षेत्र—

- ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक जागरूकता
- संस्कृति एवं लोकपरंपरा संरक्षण
- महिलाओं और युवाओं में नेतृत्व-विकास
- डिजिटल एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा

इन गतिविधियों ने शिक्षा को समाज से जोड़ते हुए ज्ञान को अधिक उपयोगी और जीवनोपयोगी बनाया।

4. समाज तक पहुँचता ज्ञान : अध्ययन शाला की पहचान

अध्ययन शाला की अनुसंधान और सामाजिक गतिविधियाँ केवल सिद्धांत तक सीमित नहीं हैं—
वे सामाजिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और मानव मूल्यों की उन्नति से गहरे जुड़ी हैं।
इस प्रकार अध्ययन शाला—

- ज्ञान को शोध में,
- शोध को व्यवहार में,
- और व्यवहार को समाज-उन्नति में
- परिवर्तित करने हेतु सतत प्रयासरत है।

यह यात्रा विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों को समाज के प्रति उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता और नेतृत्व की प्रेरणा देती है।

नवांकुर : सृजनशीलता और युवा स्वर

अध्ययन शाला का "नवांकुर" खंड विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच, कलात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक समझ का जीवंत प्रतिबिंब है। यह खंड युवा प्रतिभाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ वे स्वतंत्र रूप से सोच सकते हैं, लिख सकते हैं और अपने विचारों को समाज के सामने रख सकते हैं।

1. कविता – "नई सुबह की गूँज"

छात्रा: अंशिका वर्मा (B.A. I Year)

नई सुबह की रोशनी में,
एक उम्मीद उतरती है।
थके कदमों में फिर से,
चलने की चाह भरती है।
सपनों की राह लंबी है,
पर साहस साथ चलता है।
हर अँधेरा मिटकर अंत में,
सूरज बनकर मिलता है।

2. शॉर्ट ब्लॉग – "डिजिटल युग में भाषा का महत्व"

छात्र: आर्यन मिश्रा (BCA II Year)

डिजिटल दुनिया में भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं रही, यह पहचान और अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन बन चुकी है। चाहे सोशल मीडिया हो, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान नए अवसरों का द्वार खोलता है। नई तकनीकें भाषा को बाधा नहीं, बल्कि पुल बनाने का काम कर रही हैं।

नवांकुर : सृजनशीलता और युवा स्वर

3. विचार – "संस्कृति हमें जोड़ती है"

छात्रा: प्रज्ञा सोमवंशी (B.Com I Year)

भारतीय संस्कृति विविधता में एकता का अद्भुत उदाहरण है। त्योहार, परंपराएँ, कला और लोकगीत हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हैं। आधुनिक जीवन की व्यस्तता में भी संस्कृति वह धागा है जो समाज को भावनात्मक रूप से एक साथ बाँधकर रखता है।

4. शॉर्ट मॉरल स्टोरी – "एक दीपक की सीख"

छात्र: विवेक ठाकुर (B.Sc. I Year)

एक दीपक दूसरे दीपक को जलाते हुए बोला,
"मेरी लौ तुम्हें देने से मैं कमज़ोर नहीं हो जाता। बल्कि हमारे मिलकर जलने से अँधेरा और कम हो जाता है।"
कहानी की सीख: ज्ञान, समय और दया—इन सबको बाँटने से कभी कमी नहीं होती।

5. कविता – "माँ की मिट्टी"

छात्रा: शालिनी दवे (B.A. II Year)

इस धरती की खुशबू में,
अपना सा कुछ मिलता है।
गाँव की पगडंडी पर चलकर,
मन फिर बच्चा बन जाता है।
मिट्टी की यह सौंधी गंध,
संस्कृति की पहचान है।
जहाँ जड़ों से जुड़े रहें,
वहीं असली सम्मान है।

6. लघु लेख – "कला हमें संवेदनशील बनाती है"

छात्र: हर्षित जैन (BFA I Year)

कला सिर्फ रंगों का खेल नहीं, यह अनुभूति का विस्तार है। चित्रकारी, संगीत, नृत्य या नाटक—कला हृदय को कोमल बनाती है और दृष्टि को गहरा। यह मनुष्य को समाज की पीड़ा, सुंदरता और संघर्ष को देखने की क्षमता देती है। इसलिए विश्वविद्यालय जीवन में कला का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

7. विचार – "पुस्तक: मन की खिड़की"

छात्रा: रेनू यादव (Paramedical I Year)

पुस्तकें हमें वह दिखाती हैं जो हमारी आँखें नहीं देख पातीं। हर पुस्तक एक नई दुनिया, एक नया अनुभव और एक नई सीख लेकर आती है। पुस्तक पढ़ने से सोच विकसित होती है और निर्णय क्षमता मज़बूत होती है।

8. डायरी नोट – "एक दिन पुस्तकालय में"

छात्र: करण पाटिल (BA III Year)

आज पुस्तकालय में भीड़ असामान्य रूप से अधिक थी। हर टेबल पर चर्चा, हर कोने में पढ़ाई—मानो ज्ञान की ऊर्जा हवा में घुली हो। कुछ छात्र कहानी पढ़ रहे थे, कुछ नोट्स बना रहे थे। मुझे महसूस हुआ कि जब विद्यार्थी सीखने के लिए स्वयं प्रेरित होते हैं, तभी विश्वविद्यालय का असली वातावरण बनता है।

सहभागिता और सफलता की कहानियाँ : प्रेरणा के नए पथ

कुछ छात्र और शिक्षक ऐसे होते हैं जिनकी यात्रा दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाती है। इस अंक में हमने उन विद्यार्थियों को स्थान दिया है जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य प्राप्त किए, भाषा कौशल को सुधारकर नई राहें बनाई, और सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाई। शिक्षकों के मार्गदर्शन और विद्यार्थियों की लगन से उभरती सफलता की ये कहानियाँ अध्ययन शाला के उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण का परिचायक हैं। यह खंड न सिर्फ उपलब्धियाँ दर्शाता है, बल्कि दूसरों को प्रेरित करने का माध्यम भी बनता है। इस वर्ष कई विद्यार्थियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी व्यावसायिक यात्रा शुरू की। दर्शन चौहान ने स्मार्ट पॉइंट में ऑपरेटिंग वर्क संभालकर अपने कौशल का परिचय दिया। अभय जगताप ने रेलवे में पैरासोल मैनेजर के रूप में नई भूमिका निभानी शुरू की। समाजसेवा से जुड़े कार्यों में भी विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया—निशा चौहान, दुर्गा कासडेकर और छाया पाटिल ने आंगनवाड़ी सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया, जबकि तमन्ना चौहान और पूजा घेर्ले आंगनवाड़ी सुपरवाइज़र बनकर नेतृत्व की भूमिका में उभरीं।

सुरेश चौहान ने सेंटरिंग मैनेजर के रूप में, शेखर मोहे ने अस्पताल में स्टॉक कीपर-सुपरवाइज़र के रूप में और कमलचंद पटेल ने कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में अपने कौशल का सफल उपयोग किया। वहीं, दुर्गा ने सीवीआरयू खंडवा में रिसेप्शनिस्ट की नई भूमिका निभाते हुए अपने करियर की शुरुआत की। सिर्फ रोजगार ही नहीं—शोध गतिविधियों में भी विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वैशाली सिंह, निकिता चौहान और किशन गाठे ने निमाड़ के भूले-बिसरे मंदिरों का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन, निमाड़ी आभूषणों का वैज्ञानिक महत्व, और निमाड़ के पारंपरिक भोजन के शारीरिक–मानसिक प्रभाव जैसे विषयों पर शोध प्रस्तुत किया। उनकी यह प्रस्तुति न केवल शैक्षणिक रूप से सशक्त रही, बल्कि क्षेत्रीय संस्कृति की पहचान को भी नए रूप में सामने लाई।